B. Com. Part II (Subsidiary)

Planning and Economic Development of India

Q. आर्थिक नियोजन क्या है? आर्थिक नियोजन के उद्देश्यों की विवेचना कीजिए? (What is Economic Planning? Discuss its main objectives.)

Ans:- कुछ विचारकों ने आर्थिक मामलों में राज्य द्वारा किये गये किसी भी किस्म के हस्तक्षेप को आर्थिक नियोजन माना है। वस्तुतः नियोजन एक तकनीक है, साध्य का एक साधन है। साध्य आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सैन्य उद्देश्यों की पूर्ति कोई भी हो सकता है, लेकिन यह केन्द्रीय नियोजन प्राधिकरण द्वारा पूर्वनिर्धारित एवं सुपरिभाषित होना चाहिए। प्रो० रोबिन्स के शब्दों में, "विवाद का विषय एक योजना और कोई योजना नहीं के बीच नहीं है, अपितु विभिन्न किस्म की योजनाओं के बीच है।"

आर्थिक नियोजन की परिभाषाएँ

विभिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गई आर्थिक नियोजन की प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं:—

(1) Prof. Robbins के शब्दों में:- "नियोजन का अभिप्राय उत्पादन एवं विनिमय की निजी क्रियाओं पर सामूहिक नियंत्रण एवं दबाव से है।"

(2) डाल्टन के मतानुसार:- "व्यापक अर्थ में आर्थिक नियोजन उन व्यक्तियों द्वारा जिनके अधिकार में विस्तृत संसाधन हो, चुने हुए उद्देश्यों की ओर आर्थिक क्रिया को विचारपूर्वक निर्देशित किया जाना है।"

(3) H. D. Dickinson के मतानुसार:- "आर्थिक नियोजन एक निश्चित सत्ता के जागरूक निर्णय द्वारा सम्पूर्ण आर्थिक प्रणाली के विस्तृत सर्वेक्षण के आधार पर महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णय लेना है: क्या और कितना उत्पादन किया जाये कैसे, कब और कहाँ यह उत्पादन किया जाये, इसका आवंटन किसके बीच किया जाये।"

(4) Barbara Wootton के शब्दों में, "नियोजन को किसी लोकसत्ता द्वारा आर्थिक प्राथमिकताओं के जागरूक एवं विचारपूर्वक चयन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

आर्थिक नियोजन की एक सर्वमान्य परिभाषा इन शब्दों में दी जा सकती है "आर्थिक नियोजन का अभिप्राय निर्दिष्ट समयावधि के भीतर सुनिश्चित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से एक केन्द्रीय सत्ता द्वारा अर्थव्यवस्था के सुविचारित नियंत्रण एवं निर्देशन से है।"

आर्थिक नियोजन के उद्देश्य

John Elliot के शब्दों में, "नियोजन का कार्य एक उद्देश्यपूर्ण कार्य होता है। उद्देश्यों के बिना नियोजन की कल्पना करना बिलकुल कठिन है। एक अर्थ में नियोजन को किन्हीं उद्देश्यों में प्रयोज्य तटस्थ यन्त्र से सम्बन्धित किया जा सकता है। लेकिन यह भी सत्य है कि आर्थिक नियोजन की प्रकृति उन उद्देश्यों से निर्मित होती है जिनकी ओर यह निर्देशित है।" व्यावहारिक रूप से नियोजन के उद्देश्य देश-विदेश की सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों की आवश्यकताओं पर निर्भर करते हैं। नियोजन के अधिकांश उद्देश्य आर्थिक होते हैं, लेकिन इसके राजनैतिक और सामाजिक उद्देश्य भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं।

आर्थिक नियोजन के विभिन्न उद्देश्यों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है :- (1) राजनैतिक उद्देश्य, (2) आर्थिक उद्देश्य (3) सामाजिक उद्देश्य।

(1) नियोजन के राजनैतिक उद्देश्य :- भूतकाल में नियोजन का मुख्य उद्देश्य राजनैतिक रहा है तथा उससे सम्बद्ध आर्थिक एवं सामाजिक उद्देश्य गौण रहे हैं। नियोजन के प्रमुख राजनैतिक उद्देश्य तीन माने जा सकते हैं :-

(i) सुरक्षा :- सुरक्षा के उद्देश्य से राष्ट्रीय संसाधनों का समायोजन उद्योगों का संगठन एवं नीतियों का परिचालन ऐसे ढंग से किया जाता है कि सम्भावी आक्रमण से देश की सीमाओं की रक्षा की जा सके। विगत चीनी और पाकिस्तानी आक्रमणों के बाद भारत में भी सुरक्षा की समुचित तैयारी नियोजन का प्रमुख उद्देश्य बन गया है।

(ii) आक्रमण :- भूतकाल में नियोजन का मुख्य उद्देश्य साम्राज्यवाद का विस्तार रहा है। इटली में फासिस्टवादी नियोजन का ध्येय रोमन साम्राज्य की स्थापना करना था। हिटलर ने भी आक्रमण की योजना बनाकर साम्राज्य का विस्तार करना चाहा था।

(iii) शान्ति :- वर्तमान युग में शान्ति की स्थापना नियोजन का मुख्य राजनैतिक उद्देश्य माना जाता है। विश्व शान्ति को संसार की आर्थिक समृद्धि का आवश्यक अंग माना जाने लगा है। आजकल विश्व के सभी प्रमुख राष्ट्र शान्ति की स्थापना तथा पिछड़े हुये देशों की आर्थिक उन्नति के लिये प्रयत्नशील हैं।

Scanned with

(2) (ii) निर्योजन के आर्थिक उद्देश्य :- आजकल नियोजन के अन्तर्गत आर्थिक उद्देश्यों को सर्वोपरि समझा जाता है। नियोजन के प्रमुख आर्थिक उद्देश्य इस प्रकार हैं:-

(i) प्राकृतिक संसाधनो का विदोहन :- नियोजन का मुख्य आर्थिक उद्देश्य उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम शोषण करना, उनके द्वारा दुरुपयोग बर्बादी को रोकना, नये संसाधनों की खोज करना तथा उपलब्ध संसाधनो के उपयोग की नई तकनीक का विकास करना होता है।

(ii) पूर्ण रोजगार की प्राप्ति :- पूर्ण रोजगार की प्राप्ति को नियोजन का प्रमुख आर्थिक उद्देश्य माना जाता है। कीन्स ने भी पूर्ण रोजगार की अवस्था को कायम रखना नियोजित विकास का मुख्य लक्ष्य स्वीकार किया था। अल्पविकसित देशो मे विद्यमान बेरोजगारी और अदृश्य बेरोजगारी को समाप्त करना है।

(iii) पिछड़े हुए क्षेत्रों का विकास :- श्री विट्ठल बाबू के मतानुसार, नियोजन का सम्बन्ध पिछड़े हुए क्षेत्रों से अधिक रहता है। इसका उद्देश्य पिछड़े क्षेत्रों मे पाये जाने वाले कुसमंजन को ठीक करना है, ताकि देश के विभिन्न भागों मे विकास की दृष्टि से सन्तुलन बना रहे।

(iv) औद्योगीकरण :- संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्रतिवेदन के अनुसार, एशिया और सुदूरपूर्व के देशों मे नियोजन का प्रमुख और अन्तिम उद्देश्य औद्योगिक विकास रहा है। औद्योगीकरण के बिना उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का पूर्ण विदोहन, पूर्ण रोजगार की प्राप्ति तथा अर्थव्यवस्था का सर्वांगीण एवं संतुलित विकास असम्भव होता है।

(v) अवसर की समानता :- आर्थर लुईस का मत है कि कुशलता की न्यूनता और सम्पत्ति के असमान वितरण के कारण ही अवसर की असमानता उत्पन्न होती है। इसके निवारण हेतु सभी व्यक्तियों को शिक्षण एवं प्रशिक्षण की सुविधाएं प्रदान करना, प्रत्येक को अपनी कुशलता का प्रयोग करने का अवसर देना, राजकोषीय ~~और~~ अस्त्रो तथा संवैधानिक परिवर्तनो द्वारा आर्थिक एवं सामाजिक असमानता को समाप्त करना तथा सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार करना नियोजन का उद्देश्य होता है।

(vi) आर्थिक पुनर्निर्माण :- द्वितीय महायुद्ध के उपरान्त अनेक यूरोपीय देशों ने अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण करने के ~~लिए~~ उद्देश्य से योजनाएँ बनायी। अतः युद्धोपरान्त नियोजन का मुख्य उद्देश्य युद्ध के फलस्वरूप हुई आर्थिक क्षति को समाप्त करना तथा युद्ध के अनुभवों के आधार पर अर्थव्यवस्था को पुनर्गठित करना होता है।

Scanned with

(vii) अधिकतम उत्पादन :- प्रो० मीड के मतानुसार, राष्ट्रीय उत्पादन का अधिकतम करना आर्थिक नियोजन का प्रमुख उद्देश्य है क्योंकि जनकल्याण अन्तिम रूप से उत्पादन वृद्धि पर ही निर्भर करता है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु विभिन्न उत्पादन क्षेत्रों के बीच उपलब्ध साधनों का विवेकपूर्ण आवंटन, कला, तकनीकी ज्ञान और श्रम कौशल में वृद्धि, श्रमिकों और सेवायोजकों के बीच मधुर सम्बन्धों की स्थापना, विभिन्न क्षेत्रों में विद्यमान अनावश्यक प्रतिस्पर्धा का अन्त, शिशु उद्योगों को संरक्षण प्रदान करना, मौद्रिक स्थायित्व उत्पादन की इकाईयों में विवेकीकरण और विशिष्टीकरण की रीतियाँ लागू करना आवश्यक होता है।

(viii) आर्थिक सुरक्षा :- आर्थिक सुरक्षा का अभिप्राय आर्थिक क्रियाओं में संलग्न विभिन्न साधनों को अपना उचित अंश मिलने की व्यवस्था तथा एक साधन के द्वारा दूसरे साधनों का शोषण न किये जाने से है। उत्पादन के ~~प्रत्येक~~ प्रत्येक साधन को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करके उनकी उत्पादकता बढ़ाना आर्थिक नियोजन का मुख्य उद्देश्य माना जाता है।

(ix) आय की समानता :- नियोजित विकास का एक प्रमुख उद्देश्य आय तथा सम्पत्ति के वितरण में अधिकाधिक समानता लाना भी है। इस उद्देश्य से आर्थिक शक्ति के संकेन्द्रण पर रोक लगायी जाती है, प्रगतिशील करारोपण द्वारा धनी व्यक्तियों की आय घटायी जाती है तथा मजदूरी पद्धति में सुधार, मूल्य नियंत्रण और राशनिंग की व्यवस्था लागू करके निर्धन वर्ग की आय में वृद्धि की जाती है।

(x) विदेशी बाजार में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करना :- विकास की गति को बनाये रखने के लिए घरेलू उपभोग और विदेशी निर्यात में वृद्धि करना आवश्यक होता है।

(3) नियोजन के सामाजिक उद्देश्य दो प्रकार के होते हैं :-

(i) सामाजिक समानता :- समाजवादी देशों के साथ-साथ समाजवाद की ओर अग्रसर अर्थव्यवस्था वाले और जनतान्त्रिक देशों में भी नियोजन का प्रमुख सामाजिक उद्देश्य सामाजिक समानता लाना है।

(ii) सामाजिक सुरक्षा :- 'सामाजिक सुरक्षा' का अभिप्राय जनसमूह के लिए ऐसी सुविधाओं की व्यवस्था से है, जो जनसाधारण को विभिन्न आकस्मिक आपदाओं (बीमारी, बेकारी, वृद्धावस्था अपंगता, मृत्यु आदि) के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करे।

Scanned with